श्री राशिपुरम कृष्णास्वामी नारायण
Sri Rasipuram Krishnaswami Narayan

श्री राशिपुरम कृष्णास्वामी नारायण, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान कर रही है; अंग्रेज़ी में लिखने वाले जाने-माने भारतीय कथा सम्राट हैं।

श्री आर.के. नारायण का जन्म 10 अक्तूबर 1906 को मद्रास में हुआ। वहीं पर उन्होंने आरम्भिक शिक्षा पायी। मैसूर स्थित महाराजा विद्यालय में प्रधानाध्यापक पद पर अपने पिता की नियुक्ति होने पर वे उनके साथ मैसूर आ गये। 1930 में उन्होंने महाराजा कॉलेज से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की, जो मैसूर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था। एक लेखक रूप में उनका कार्य-जीवन छह दशकों से अधिक की अवधि में फैला हुआ है, जिसका शुभारम्भ उनके प्रथम उपन्यास, *स्वामी एंड फ्रेंड्स : ए नॉवेल ऑफ़ मालगुड़ी* के 1935 में प्रकाशन के साथ हुआ। इसके पश्चात् 1937 में द *बैचलर ऑफ़ आर्ट्स* और 1938 में *डार्क रूम* प्रकाशित हुआ; यद्यपि उनकी कुछ कहानियाँ पहले ही द *हिन्दू* में प्रकाशित हो चुकी थीं, जब वे कुछ समय के लिये समाचार पत्र संवाददाता, मैसूर सचिवालय के कर्मचारी और एक शिक्षक के रूप में कार्यरत रहे।

1949 में पाँचवें उपन्यास *मि. सम्पत* (द प्रिंटर ऑफ़ मालगुड़ी, नाम से 1957 में प्रकाशित) का प्रकाशन एक बड़ी सफलता थी, जिसने काल्पनिक मालगुड़ी को - जो उनकी पूर्वकृतियों में भी संकेतित था— कर्नाटक के एक क़स्बे की निरन्तर बदलती दुनिया को जो एक अपरिवर्तनशील लघु जगत दीखती है, अपने पाठकों के मस्तिष्क में दृढ़ता से स्थापित किया है। वास्तव में मालगुड़ी एक कल्पनाकृत मैसूर है, जहाँ पर लेखक ने लेखन के प्रति समर्पित अपना अधिकांश जीवन व्यतीत किया है। मालगुड़ी की दुनिया सामान्य नर-नारियों से भरी-पूरी है, जो कभी-कभी असाधारण लालसाओं, सपनों और योजनाओं में मग्न रहते हैं और कारुणिक-हास्यकर, यहाँ तक कि बेतुकी और अनोखी नियति को सहते हैं। श्री नारायण उन कुछ लेखकों में से हैं, जिन्होंने विस्तार की दृष्टि से इतना लघु घटनास्थल सर्जित किया है, तथापि यह मानव मस्तिष्क और विश्व में घटित होती असंख्य चीज़ों को प्रतिबिम्बित करने में सक्षम है। मालगुड़ी, औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक भारत में सांस्कृतिक विनिमय की कसौटी बन गया है, जो कभी-कभी युगों पुराने विश्वासों और अंधविश्वासों को एक कठोर परीक्षा में डाल देता है।

वैयक्तिक-आत्मकथात्मक और सार्वभौम-सामाजिक तत्त्वों के सूक्ष्म सम्मिश्रण उनकी कथाओं को निश्चित प्रामाणिकता और मार्मिकता प्रदान करते हैं। उनका चौथा उपन्यास *दी इंग्लिश टीचर* (1945), जो *ग्रेटफुल टु*

Sri Rasipuram Krishnaswami Narayan, on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship, is a universally acknowledged Indian master of fiction writing in English.

Sri R.K. Narayan was born on 10 October, 1906 in Madras and had his schooling there. He moved to Mysore with his father, who was appointed Head Master of the Maharaja's School. He graduated from the Maharaja's College, affiliated to the University of Mysore, in 1930. His career as a writer spanning over six decades began with the publication of his first novel, *Swami and Friends : A Novel of Malgudi* in 1935, followed by *The Bachelor of Arts* in 1937, and *The Dark Room* in 1938, though some of his short stories had already appeared in *The Hindu* while he worked briefly as a newspaper correspondent, as an official in the Mysore Secretariat, and as a teacher.

The breakthrough came in 1949 with the fifth novel, *Mr. Sampath* (also published as *The Printer of Malgudi*, 1957) which firmly established the imaginary Malgudi, foreshadowed in his earlier works, in the minds of his readers, as a veritable microcosm of the changeless, yet constantly changing world of a Karnataka township. Malgudi in fact is a fictionlized Mysore where the author has spent most of his years given entirely to writing. The world of Malgudi is peopled with ordinary men and women, sometimes indulging extraordinary yearnings, dreams, and schemes and enduring tragi-comic or even grotesque and weird destinies. Sri Narayan is amongst the few writers who has created a locale so tiny in dimensions yet capable of mirroring the myriad goings-on in the human psyche and in the universe. Malgudi also became a touchstone of cross-cultural exchanges in the colonial and post-colonial India, putting sometimes age-old beliefs and superstitions to a severe test.

A subtle blending of personal-autobiographical and universal-sociological elements lends his narratives a certain authenticity and poignancy. *The English Teacher* (1945) his fourth novel, which he also published as *Grateful to Life and Death* (1953) and which relates indirectly an account of his marriage and the early death of his beloved wife, is a sombre

लाइफ़ एंड डेथ (1953) के रूप में भी प्रकाशित हुआ, तथा जो अप्रत्यक्ष रूप से उनके विवाह के विवरण और उनकी प्रिय पत्नी के असामयिक निधन से सम्बद्ध है; स्कूल के एक युवा अध्यापक के संघर्ष और उसके विभिन्न सम्बन्धों पर वैचारिक दृष्टि डालता है। अपनी नवीनतम कृतियों में से एक, *ग्रैण्ड मदर्स टेल* में लेखक एक छोटी लड़की (अपनी ही परदादी)- जो सात वर्ष की वय में दस वर्ष के लड़के के साथ ब्याही गयी- के विकास का चित्रण कठोर जीवन में लम्बे प्रवास के माध्यम से करता है। यह निष्कपटता की कथा है जो संकल्प में परिपक्व हो रही है और अन्ततः प्रचलित प्रतिमानों के साथ समझौता करती है। कहानी में स्वयं लेखक को 'बातूनी आदमी' की भूमिका में पहचाना जा सकता है।

मि. सम्पत का मुख्य पात्र श्रीनिवास ऐसा व्यक्ति है, जो मानवीय सम्बन्धों और क्रियाकलापों की अव्यवस्था में उलझा हुआ है और वह कमोबेश आर.के. नारायण के अनेक चरित्रों का प्रतिनिधित्व करता है। अपनी ज़िन्दगी की उद्देश्यहीन शुरूआत में श्रीनिवास द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मालगुड़ी में एक अख़बार प्रकाशित करने का प्रयास करता है जो "केवल उस युद्ध से सम्बद्ध हो जो हमेशा मनुष्य के अन्तः और बाह्य में जारी है।"

विभिन्न समालोचकों का ध्यान इस बात की ओर ठीक ही गया है कि नारायण की अधिकांश कृतियों में प्रज्ञा की एक गहरी चिन्तनशील प्रवृत्ति है, जो ऐहिक को दार्शनिक और सौन्दर्यपरक ऊँचाइयों की ओर ले जाती है। उनके कुछ पात्रों में 'आत्म-ज्ञान' की कमी और फलस्वरूप 'विक्षिप्तता', जिसे कि *मि. सम्पत* और अन्य कृतियों में देखा जा सकता है, स्वभावतः पाठकों को हिन्दू दार्शनिक व्यवस्था के साथ लेखक की स्थायी सम्बन्ध की तलाश की ओर ले जाती है। उदाहरण के लिए *द फ़ाइनैंशल एक्सपर्ट* (1952) को, जो एक तरह की ग़रीबी-से-अमीरी और पुनः ग़रीबी की कहानी है, प्रलोभन और छल कपट तथा एक विशेष सांस्कृतिक पर्यावरण में एक नैतिक बेचैनी के भँवर में पड़े मानवीय अर्थ-लिप्सा के एक उपन्यास के रूप में भी पढ़ा जा सकता है।

सत्य और प्रतीति के मध्य अन्योन्य क्रिया एक दूसरी प्रमुख विषय वस्तु है जो अनेक दार्शनिक परम्पराओं में मिलती है; नारायण के सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास *द गाइड* की मुख्य प्रेरणा के रूप में इसे देखा जा सकता है। पाप और पुण्य, बुराई और अच्छाई, दोषदर्शिता और विश्वास : लगता है सभी सूर्य-तले अपना उचित स्थान पाने के लिए एक दूसरे के साथ धक्का-मुक्की कर रहे हों, मानो अपनी तीव्र संदिग्धताओं से निष्कपट को हैरान कर देने के लिए। 1960 में आर.के. नारायण को *द गाइड* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पर बनी फ़िल्म भी काफ़ी लोकप्रिय हुई। विभिन्न कहानियों पर बनी फ़िल्मों तथा दूरदर्शन धारावाहिकों से मालगुड़ी के रचनाकार का यश चारों और फैला है।

बहुसर्जक नारायण के अब तक चौदह उपन्यास, छह कहानी-संग्रह, दो यात्रावृत्त और कई गैर-कथात्मक कृतियाँ प्रकाशित हैं। *गाड्स, डेमंस एंड अदर्स* (1964) में उन्होंने अपनी अप्रतिम सरल शैली में कुछ पौराणिक कथाओं का पुनराख्यान किया है। उन्होंने आधुनिक गद्य में *महाभारत* और *कम्बन रामायण* के संक्षिप्त अनुवाद प्रकाशित किये हैं। दो पुस्तकों में उनके आत्मकथात्मक विवरण हैं: *माई डेटलेस डायरी* (1960) और *माइ डेज*

reflection on the struggle of a young schoolteacher and his various relationships. In one of his latest works, *Grandmother's Tale*, the author depicts the growth of a little girl (his own greatgrandmother) married at seven to a boy of ten, through a long sojourn in arduous life. Here is a tale of innocence maturing into determination and ultimately coming to terms with the prevalent norms; the author himself can be discerned in the story in the guise of "the talkative man"

Srinivas, the main character in *Mr. Sampath*, is a man "involved in a chaos of human relationships and activities," and he more or less represents many of R.K. Narayan's characters. In his aimless beginnings of his life, Srinivas tries to found a newspaper in Malgudi during the Second World War "only concerned with that war that is always going on between man's inside and outside."

As rightly noted by various critics, there is a deep meditative strain of wisdom in most of Narayan's works which elevates the mundane to a philosophical and aesthetic heights. Lack of "self-knowledge" and the resultant idiosyacracies of some of his characters, as evinced in *Mr. Sampath* and other works, naturally lead his readers to look for the abiding relationship the author has to the Hindu philosophical systems. *The Financial Expert* (1952), a kind of rags-to-riches-to-rags story, for example, can also be read as a novel of human cupidity in a vortex of temptations and tricks, and of moral unease in a particular cultural milieu.

The interplay between truth and appearance, another major theme found in several philosophical traditions, could well be regarded as the mainspring of Narayan's most famous novel, *The Guide*. Sin and virtue, wickedness and saintliness, cynicism and faith all seem to jostle with one another to find their right place under the sun, only to confound the guileless with acute ambiguities. R.K. Narayan was presented with the Sahitya Akademi Award in 1960 for *The Guide*, which also became highly popular in its cinematic version. Films and television serials on his various stories have immensely furthered the name and fame of the creator of Malgudi.

The prolific Narayan has so far published 14 novels, over six collections of short stories, two travelogues and several works of non-fiction. In *Gods, Demons and Others*, (1964) he has retold some of the mythological stories in his inimitable style. He has published abbreviated translations of the *Mahabharata* and the Tamil classic, *Kamban Ramayana* in modern prose. Two of his books are devoted to his autobiographical notes, *My Days: A Memoir* (1974), preceded by *My Dateless Diary* (1960). His travelogue about Mysore State, *The Emerald Route* (1978), has sketches by his younger brother, R.K. Laxman, the famous cartoonist.

Loved by his readers all over the world, R.K. Narayan displays a rare combination of tenderness, catholicity, and compassion with a hard-headed realism. It is his gentle irony

अ मैम्वार (1974), मैसूर राज्य के उनके यात्रावृत्त *द एमराल्ड रूट* (1974) के चित्र उनके छोटे भाई और प्रसिद्ध व्यंगचित्रकार आर.के. लक्ष्मण ने बनाये हैं।

पूरे विश्व में फैले अपने पाठकों के चहेते आर.के. नारायण में कोमलता, उदारता और व्यवहार-कुशल यथार्थवाद के साथ सहानभूति भी है। यह उनकी सौम्य व्यंगोक्ति और प्रिय विनोदशीलता है, जो इतनी नरमी से किन्तु विध्वंसक रूप से परिस्थितियों के प्रवाह में प्रत्येक व्यक्ति की दुर्बलताओं और मूर्खताओं, ख़ब्तों और मनोग्रंथियों, सफलता और असफलताओं को नग्न रूप में सामने रख देती है। अपनी शैली में वह अत्यधिक सरल और विनीत हैं, यद्यपि उसके पीछे का उनका सर्जनात्मक मस्तिष्क हर समय मानव-दुर्दशा, कठोर संस्थाओं तथा विश्व की तथा, अंतर्मन की भयावह शक्तियों के साथ संघर्ष करता रहता है।

अपने लम्बे और उल्लेखनीय कार्य-जीवन में आर.के. नारायण को बहुत-से पुरस्कार तथा सम्मान मिले हैं। वह पहले भारतीय अंग्रेज़ी कथाकार थे, जिन्हें 1960 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1964 में उन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया। 1989 में वह राज्यसभा के लिए भी नामित किये गये। 1980 में उन्हें रॉयल सोसाइटी ऑफ़ लिटरेचर का ए.सी. बेंसन पदक प्रदान किया गया। 1982 में उन्हें अमेरिकन एकेडेमी एंड इंस्टीट्यूट ऑफ़ आर्ट्स एंड लेटर्स का मानद सदस्य चुना गया। लीड्स, यार्कशायर, दिल्ली और मैसूर सहित कई विश्वविद्यालयों ने उन्हें डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की।

हमारे समय के महान कथा लेखक के रूप में उनके उत्कर्ष के लिए साहित्य अकादेमी उन्हें अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान करती है।

and good-natured humour which ever so mildly yet devastatingly lay bare the foibles and follies, eccentricities and obsessions, success and failures of everyman in the flux of circumstances. He is extremely simple and unpretentious in his style and diction, though the underlying creative mind is all the time grappling with difficult questions of human predicament, cast-iron institutions, and fearful forces of the world within and without.

In his long and illustrious career R.K. Narayan has received numerous awards and honours. He was the first Indian-English writer to receive the Sahitya Akademi Award in 1960. In 1964 he was nonoured by the Government of India with "Padma Bhushan" and he was also nominated to the Rajya Sabha in 1989. Among other honours he also received A.C. Benson Medal of the Royal Society of Literature in 1980 and, in 1982, he was elected an Honorary Member of the American Academy and Institute of Arts and Letters. Several universities, including Leeds, Yorkshire, Delhi and Mysore have conferred D. Litt. on him.

For his eminence as a writer of great fiction in our times, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship on Sri R.K. Narayan.